''अंसगठित क्षेत्र में महिलाओं का कार्य''

जूही सिंह

महिलाओं के कार्य के अनुभव संगठित और असंगठित क्षेत्र मे ंधकेल दी जाती है। और कार्य स्थिति की मांग के अनुसार प्रशिक्षित ओर अप्रशिक्षित कार्य के बीच झुलती रहती है। इतिहास के अवलोकन से दिखता है कि ब्रिटिश शासकों के आगमन और उनकी विभिन्न आर्थिक नीतियों का हस्तशिल्प और दस्तकारी उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। मशीनरीकरण के कारण महिला और पुरूष दोनो ही रोजगार से बाहर हो गए। 96 प्रतिशत महिलाएँ शोषण के विरूद्ध बिना किसी वैधानिक सुरक्षा के इस क्षेत्र में सक्रिय है[2] ;ह्यूमन डवेलेपमेंट इन साउथ एशियाः57द्ध ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ कृषि, बागवानी, मत्स्य उद्योग, कुक्कुट और दुग्धशाला के क्षेत्रों में काम करती है और शहरी क्षेत्रों में कपड़ों का निर्माण करने वाली इकाईयों, खाद्य प्रसंकरण और घरेलु गतिविधियों से संबंधित रहती है। अगला चार्ट भारत में 1981 और 1991 में औद्योगिक श्रेणी में मुख्य महिला श्रमिकों के प्रतिशत वितरण को दिखाता है अगले पृष्ठ पर। कृषि लगातार महिला रोजगार का मुख्य क्षेत्र बना हुआ है। कुल आर्थिक गतिविधियों में 78 प्रतिशत महिलाओं की तुलना में तकरीबन 63 प्रतिशत पुरूष खेती के कामों से जुड़े है।